माता मोहिनी देवी-आर्यिका श्री रत्नमती माताजी

मेरी जन्मदात्री माँ : असंख्य गुणों की खान

श्री आयु की षष्ठिपूर्ति 60 अवसर पर

आर्यिका श्री चन्दनामती द्वारा

जन्मदात्री माँ के प्रति समर्पित 61 भावांजलि

भारतगौरव पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

आर्यिकारत्न श्री रत्नमती माताजी

जन्म	-ईसवी सन् 1914, मगसिर कृ. पंचमी
आर्यिका दीक्षा	-मगसिर कृ. तीज, सन् 1971
समाधि	-15 जनवरी 1985, माघ कृ. नवमी

मेरी प्यारी माँ!
आपके सुगंधित उपवन की
एक मासूम कली का
आपके चरणकमलों
में कोटि-कोटि नमन।

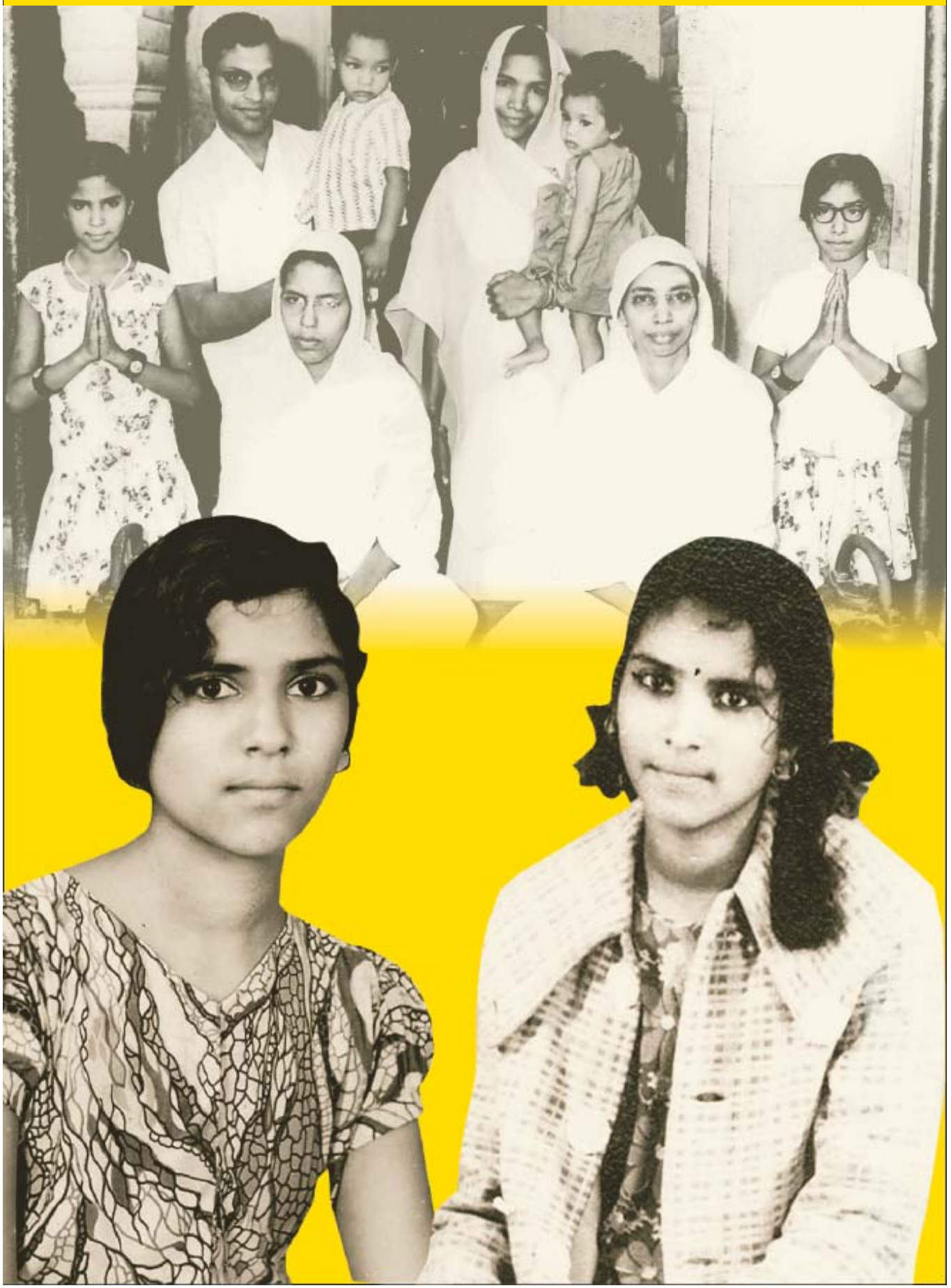

2

मेरी मोहिनी माँ!
आपने मुझे
दुनियाँ में लाकर
कन्या का सम्मान बढ़ाया
अतः आपके उपकारों
के प्रति नतमस्तक हूँ।

ममता मूरत माँ!
आपने अपनी ममता से
मेरा सिंचन करके
शैशव अवस्था प्राप्त कराई
अतः एक बाल मुस्कान
के साथ
आपका परोक्ष वन्दन।

4

अपनत्व से सराबोर माँ!
आपने स्वयं गीले में सोकर
मुझे सूखे में सुलाते हुए
जो प्राकृतिक मातृत्व
की ममता लुटाई उसके प्रति
आभार के लिए
शब्द छोटे पड़ते हैं।

5

कोमल स्पर्श देने वाली माँ!
आपकी टच थेरेपी
(Touch Therapy)
से ऊर्जा पाकर
जो कोमलता
मैंने पाई है
वह अलौकिक है।

6

अमृतमयी दुग्धपान कराने वाली माँ!
आपने अपना स्तनपान कराते
समय जो भेद-विज्ञान का
अमृतपान मुझे कराया,
आज उसी के प्रतिफल में मैं भी आपके
पदचिन्हों पर चलने के
योग्य बन सकी हूँ।

7

हे कुशल शिल्पी माँ!
आपने मुझे घुटनों के
बल पर चलना सिखाया
तो चोट खाकर भी
मोक्षमार्ग पर चलने का
प्रयत्न सतत जारी है।

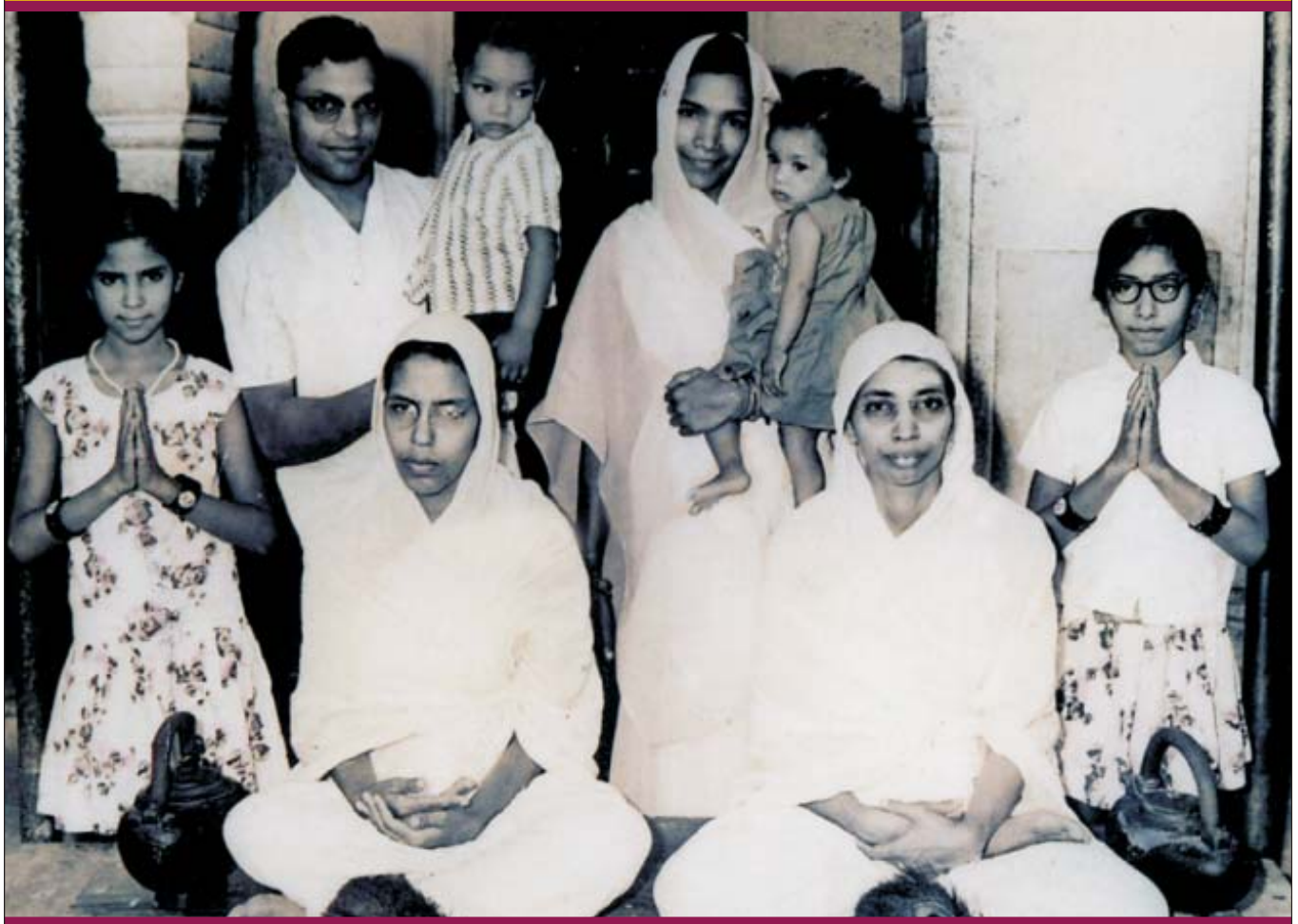

8

बचपन को संवारने
वाली मेरी विलक्षण माँ!
आपने मुझे बचपन में ही जिनवाणी
का रसास्वादन कराकर
अपने कर्तव्य का भान कराते हुए
मंजिल तक पहुँचने का
अवसर प्रदान किया।

9

प्राकृतिक सौंदर्य प्रदात्री माँ!
आपने हमें कभी सुगंधित सौंदर्य
प्रसाधनों का उपयोग नहीं करने
दिया और अपने गुणों की
सुगंधि से प्राकृतिक सौंदर्य
प्रदान किया, एतदर्थ आप
जैसी माँ को पाकर
मेरा जीवन सुगन्धित हो गया है।

10

मेरी जननी! जन्म देने वाली माताएं
तो सभी सन्तानों के लिए स्नेहमयी
होती हैं किन्तु आप जैसी जननी
तो जन्म और संस्कार दोनों के
द्वारा कर्तव्य बोध कराकर
एक अनोखी माँ का आदर्श
प्रस्तुत करने वाली है अतः मैं
अपनी जननी मोहिनी माँ का
हृदय से वंदन करती हूँ।

11

ममतामयी माँ!
आपकी ममता ने मुझे बचपन
से ही अत्यन्त प्रभावित किया है
इसीलिए मैंने आपको
भगवान के रूप में माना है
और दिल से सदा
आपकी पूजा की है।

12

समताप्रदात्री माँ! जीवन की
हर विषम परिस्थितियों में भी
समताभाव धारण करके उच्च
आदर्श प्रस्तुत करने की
शिक्षा देकर आपने मेरा भौतिक
जीवन सच में ही आध्यात्मिक
बनाने में जो मार्गदर्शन किया है,
वह अविस्मरणीय है।

माँ-बेटी से शिष्य-गुरु

13

माँ!
संसार का सबसे प्यारा
और सारभरा नाम है
माँ का, उस प्यार और सार
की सार्थकता का दिग्दर्शन
कराने वाली माँ मोहिनी
को शत शत नमन।

14

माँ!

तुम हमरा नाम
''माधुरी'' रक्खेव
तो ऊका सार्थक करे की
शक्ति भी देव,
यही तुमसे प्रार्थना है।

15

माँ!
तुमरी सेवा हमका जिन्दगी
भर करे का सौभाग्य मिला,
अतः हम अपने का
धन्य समझ रही हन।

16

माँ! एक बार बचपन मा
हमरे लाला (पिताजी)
कहिन रहैं कि या
माधुरी बिटिया तुमरे पास
जिन्दगी भर रहि है
और सेवा करि है,
उनके शब्द सही निकले ई
हमरा सबसे बड़ा
सौभाग्य रहा है।

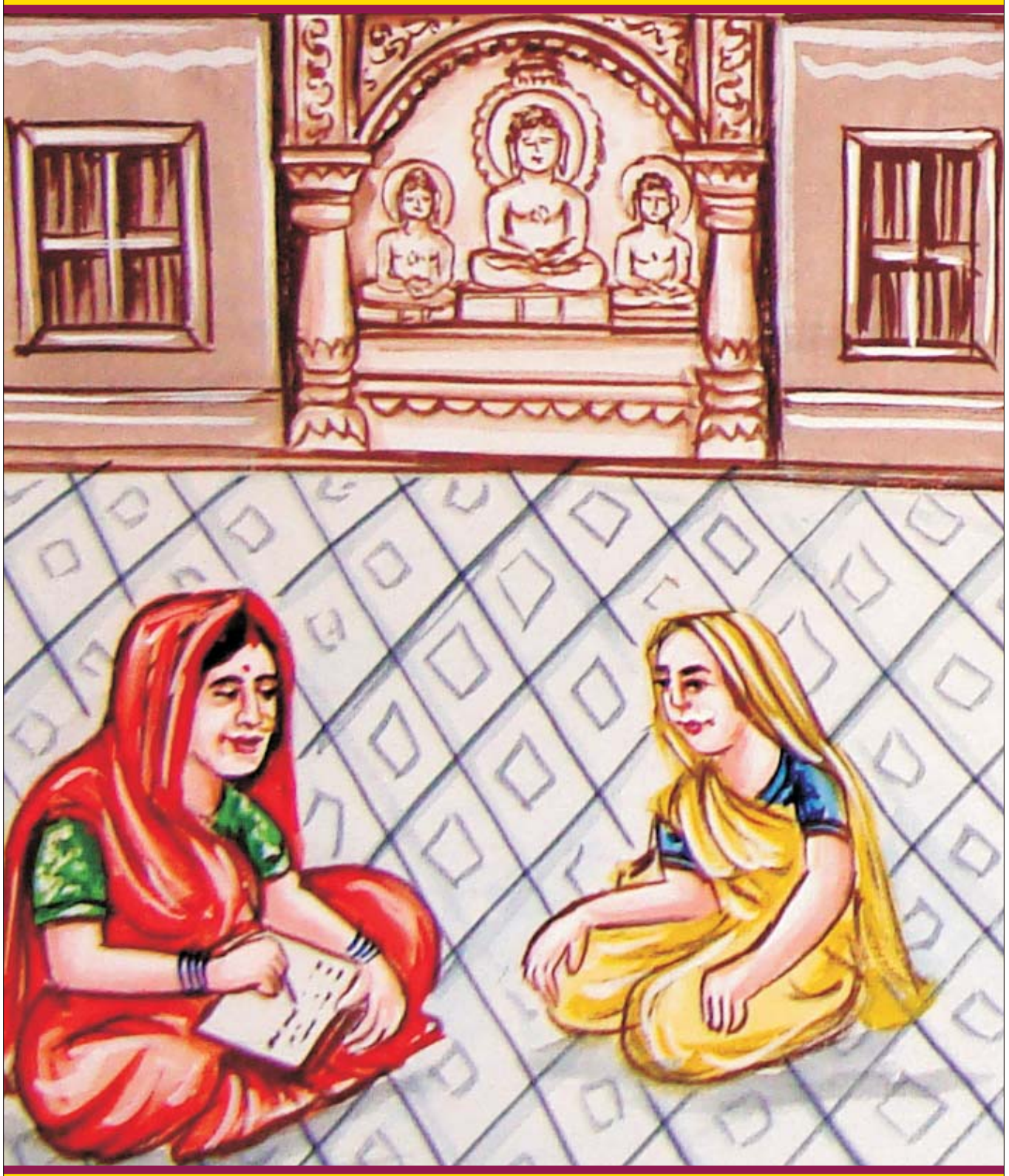

17

माँ! मैं बचपन में भी सदैव आपके
साथ शाम को मंदिर में
जाकर शास्त्र का
स्वाध्याय सुनती थी,
उसी स्वाध्याय का फल
मुझे चारित्र के रूप में
प्राप्त हुआ है।

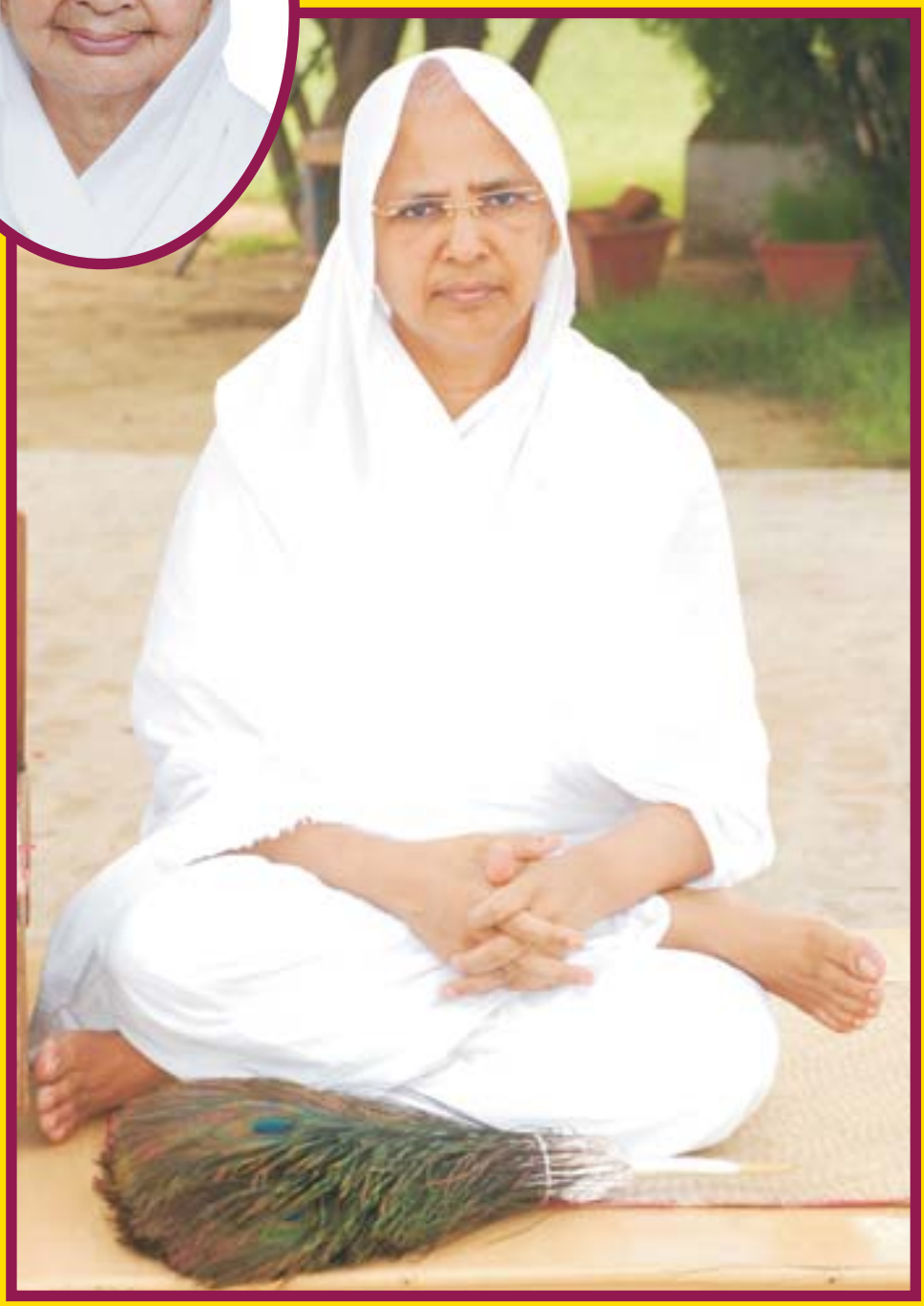

18

माँ! मुझे स्कूल में लगभग 10 वर्ष
की उम्र में सर्वप्रथम ''भारतमाता''
बनकर सफेद साड़ी पहनने का
अवसर मिला था, तब आप मुझे
देखकर बहुत खुश हुई थीं।
शायद आपकी उसी प्रसन्नता ने
मुझे आजन्म सफेद साड़ी पहनकर
आर्यिका पद में रहने का
सौभाग्य प्रदान कर दिया है।

19

माँ!
आपने सन् 1934 की
शरदपूर्णिमा
को एक विशिष्ट कन्या
''मैना'' को जन्म देकर
अपना मातृत्व
धन्य कर दिया।

20

माँ!
वही मैना बीसवीं
सदी की
प्रथम बालब्रह्मचारिणी
आर्यिका ज्ञानमती माताजी
के रूप में जगप्रसिद्ध
साध्वी बनी हैं।

भारत गौरव

(Life Time Achievement Award)

Bharat Gaurav

Life Time Achievement Award

21

माँ!
आपकी सुपुत्री वे जगत् माता
वर्तमान में आज
''भारतगौरव''
गणिनीप्रमुख बनकर
ब्राह्मी माता का स्वरूप
प्रदर्शित कर रही हैं।

22

हे माँ!
आप स्वर्ग से इन
ज्ञानमती माताजी
के कार्यकलाप देखकर
खूब प्रसन्न हो रही होंगी।

GUINNESS WORLD RECORDS®

23

हे ऐतिहासिक माँ! आपकी पुत्री ने मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र के ऋषभगिरि पर्वत पर 108 फुट के भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा बनवाकर सारे विश्व में अभूतपूर्व कीर्तिमान स्थापित कर दिया है, उनके दर्शन करके आप भी स्वर्ग से कल्पवृक्षों के पुष्प लाकर जरूर पुष्पवृष्टि करती होंगी।

24

हे माँ! आपने 13 सन्तानों
(9 पुत्री-4 पुत्र)
को जन्म देकर पहले
उनके प्रति कर्तव्य निभाए
पुनः स्वयं भी आर्यिका दीक्षा
धारणकर कठिन रत्नत्रय
का पालन किया।

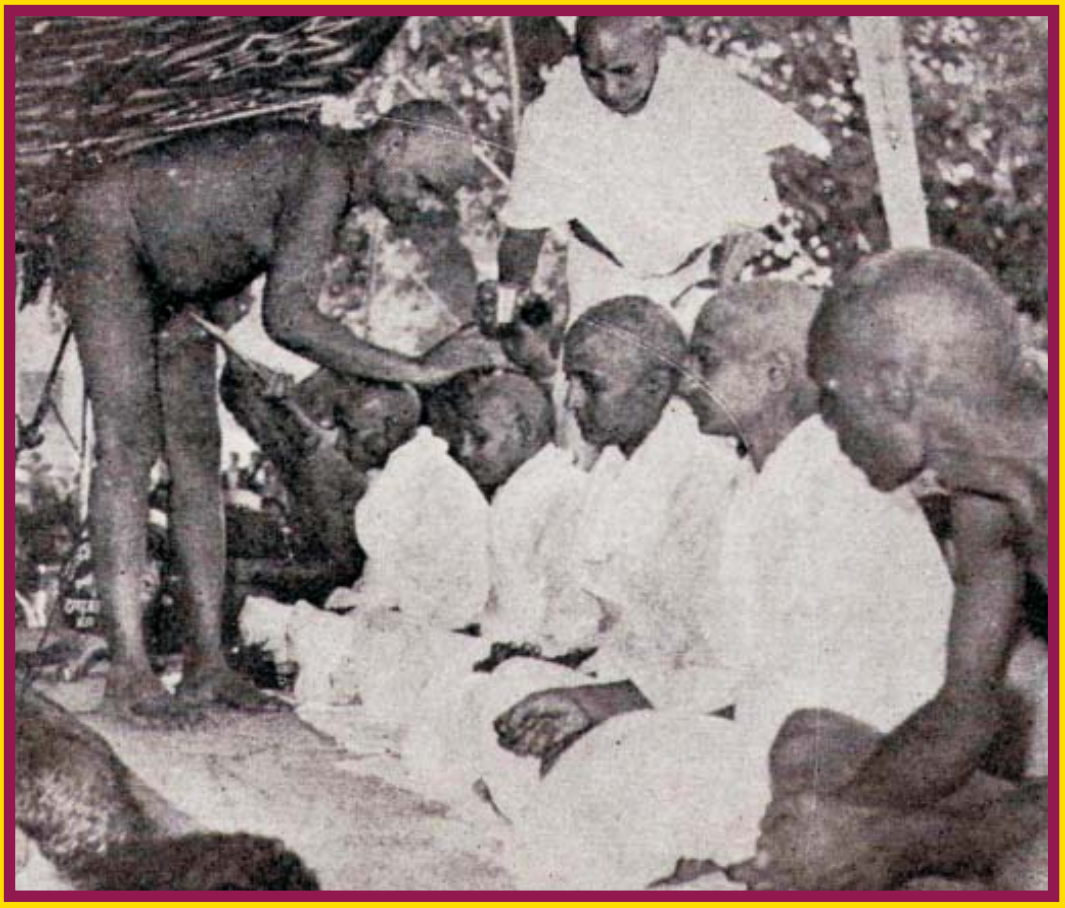

25

हे मोहिनी माँ!
आपने सन् 1971 में
आचार्यश्री
धर्मसागर जी महाराज
से दीक्षा धारण कर
"आर्यिका रत्नमती"
नाम प्राप्त किया।

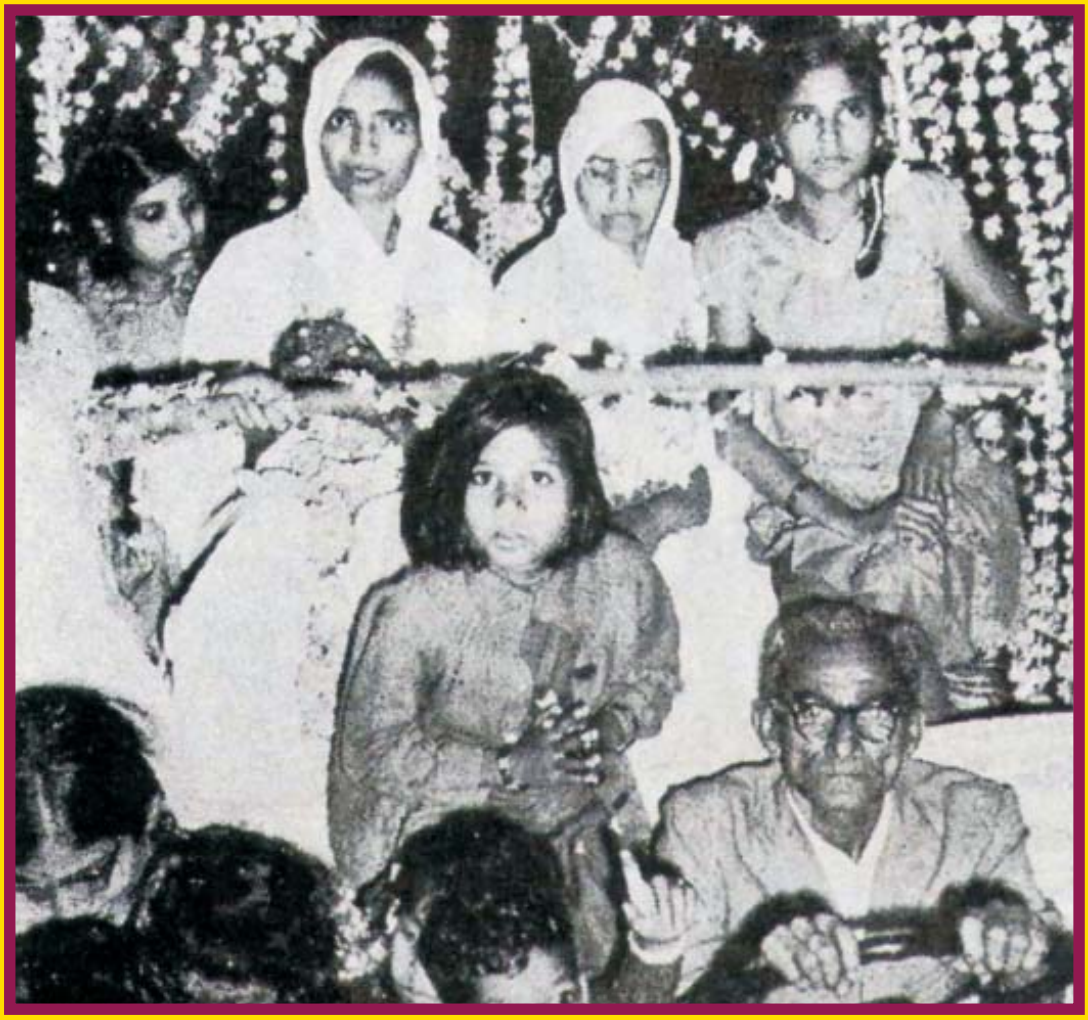

26

हे निर्मोहिनी माँ!
आपने मोहिनी से
निर्मोहिनी बनकर
संसार को बता दिया कि
आत्मदृढ़ता के बल पर हर
प्राणी निर्मोही बन संसार
समुद्र को पार कर सकता है।

अपनों
को
सिखाया
त्याग

27

हे माँ! आपकी एक पुत्री
कुमारी मनोवती ने भी
दीक्षा लेकर
''आर्यिका अभयमती'' नाम प्राप्त
किया और 48 वर्ष का दीक्षा काल
बिताकर सन् 2012 में सुंदर
समाधिमरण के साथ नश्वर
शरीर का परित्याग किया।

28

हे जगदम्बे! आपकी नवमीं संतान के रूप में जन्मे सबसे छोटे पुत्र रवीन्द्र कुमार ने 18 वर्ष की नूतन युवावस्था में ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर पुनः गृहत्याग करके जो मोक्षपंथ पर चलना प्रारंभ किया तो आज वे युवाचेतना के अग्रदूत बनकर तथा गुरुभक्ति की जीवन्त प्रतिमा बनकर "पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी" के रूप में सम्पूर्ण देश को कर्मठता एवं समर्पण का जो यशस्वी संदेश प्रदान कर रहे हैं, वह आधुनिक जगत् के लिए अनुकरणीय आदर्श है।

29

माँ!
आपने सन् 1958 की
ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या
के दिन मुझे जन्म देकर
अंधकारमयी रात्रि में
प्रकाश की तरह जीवन
जीने की शिक्षा प्रदान की।

30

मेरी प्यारी प्यारी माँ!
बाद में मैंने यह भी जाना
कि यह अमावस्या की तिथि
द्वितीय तीर्थंकर भगवान अजितनाथ
के गर्भ कल्याणक से पवित्र
तिथि है अतः उनके पदकमलों में
मेरा अनन्तशः वंदन है।

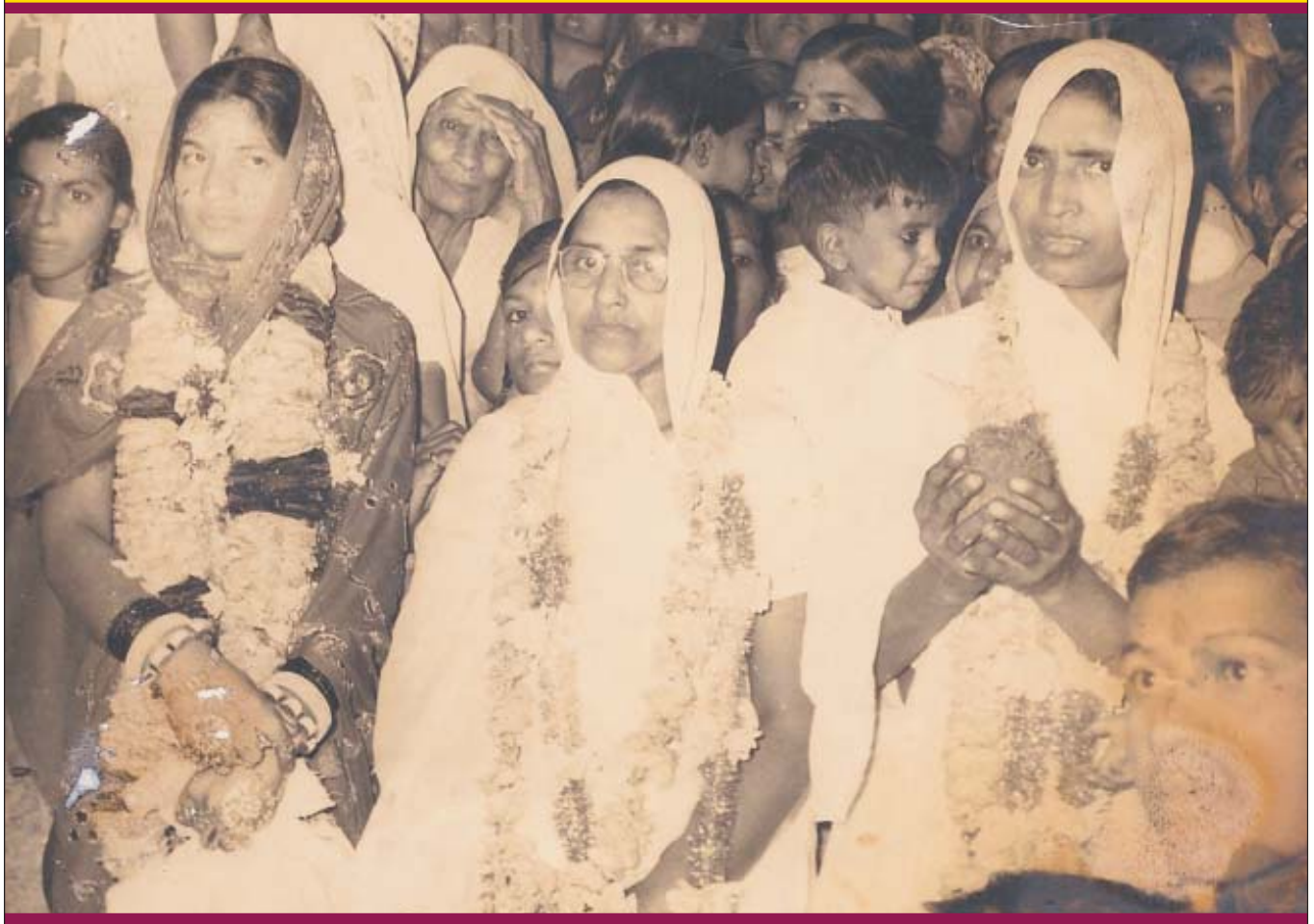

31

प्रतिभा सम्पन्न मेरी माँ!
आपने उस दिन मुझे
जन्म इसलिए दिया होगा
कि तुम भी एक दिन
गर्भकल्याणक
के साथ जन्म लेकर
अजन्मा बन जाना।

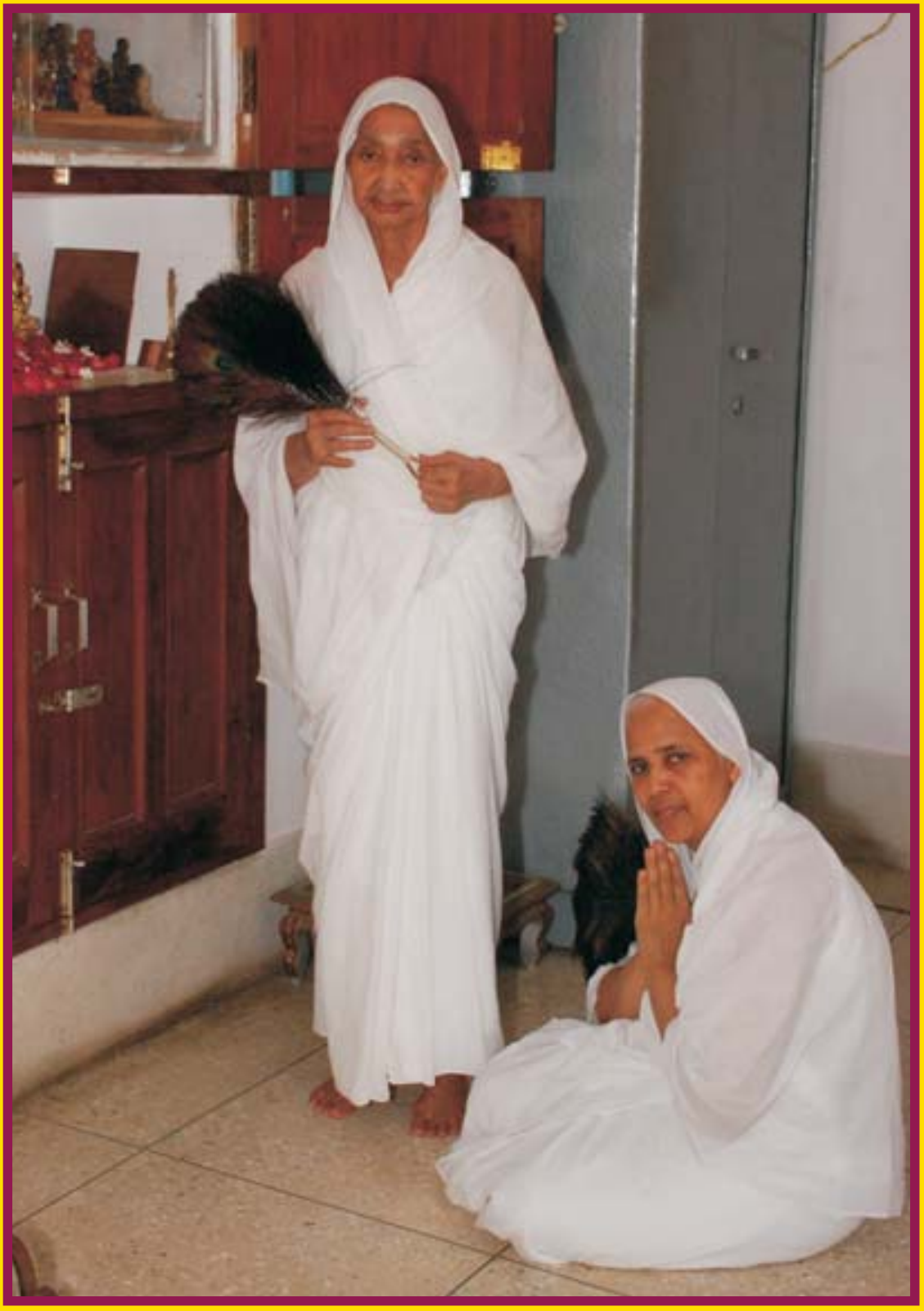

32

भविष्यदृष्टा मेरी माँ!
आपने जरूर मुझे अपने
शरदपूर्णिमा के चांद
(ज्ञानमती माताजी)
की चांदनी के साथ
मिलाने का भाव
बनाया होगा।

33

बताओ माँ मोहिनी!
इसीलिए न,
अमावस और पूर्णिमा
की जोड़ी बन गई और
तब अंधेरा भी उजेरा बनकर
कुछ प्रकाशमयी जिन्दगी
जीने लगा।

34

मेरी माँ! मैं सोचती हूँ कि
यदि अंधकार न हो तो
प्रकाश की कीमत कैसे पता
चलेगी, अतः अंधकार से
मैंने अपनी पहचान बनाकर
पूर्णिमा के प्रकाश में
जीने का निर्णय किया।

35

हे आनन्ददायिनी माँ मोहिनी!
मैं आपकी 12वीं सतान
के रूप में जन्म लेकर
संसार से वैराग्य का
चिन्तन कराने वाली
12 भावना का सतत
चिन्तवन करती हूँ।

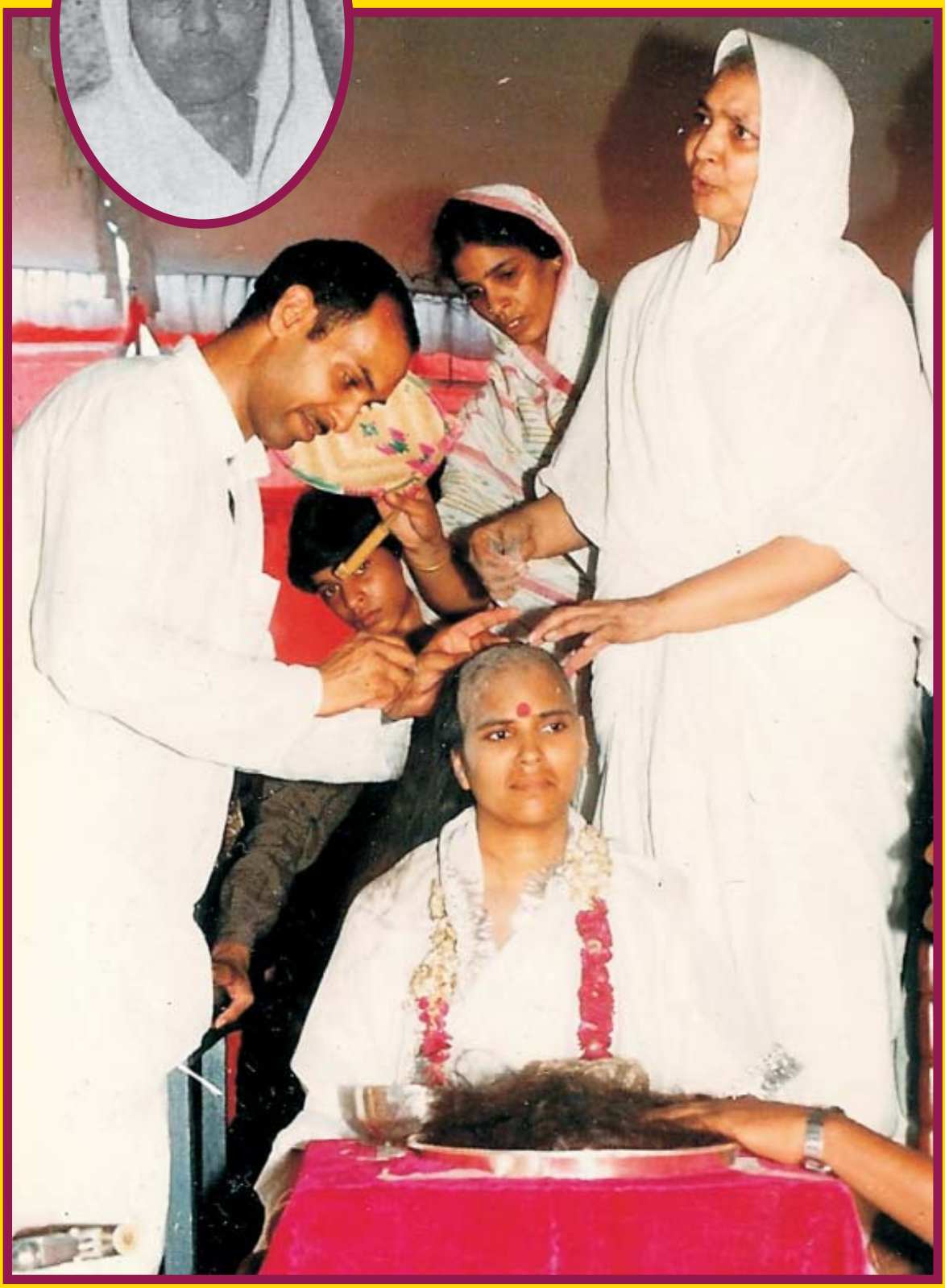

36

हे सुखप्रदात्री माँ!
बारह तपों में से भी
कुछ तपों को पालन करने
की मेरी इच्छा पूर्ण हो,
इस आशीर्वाद के लिए
आपके चरणों में
कोटि-कोटि नमन।

37

हे ज्ञानदायिनी माँ!
आप हमेशा अपनी छोटी-छोटी
बातों के द्वारा भी विशिष्ट ज्ञान
की बातें बताया करती थीं,
जो जिन्दगी के हर मोड़ पर याद
आती हैं और उन पर अमल
करने का पूरा प्रयत्न करती हूँ।

38

हे तत्त्ववेत्ता माँ! आप कहती थीं न, कि ख्याति-लाभ-पूजा की भावना से सदा दूर रहना चाहिए। मुझे भी आपका ऐसा आशीर्वाद चाहिए कि आपकी शिक्षा का पालन करते हुए ऐसी परिस्थितियाँ उपस्थित होने पर भी आपके समान निस्पृह रह सकूँ।

39

हे माँ! आपने दीक्षा लेने के बाद भी पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी को कभी नाम लेकर सम्बोधित नहीं किया, उनकी जन्मदात्री होते हुए भी उन्हें सदैव केवल 'माताजी' कहकर बात करती थीं, यह आपकी विशेष विनय का प्रतीक रहा।
मुझे भी इसी प्रकार की विनय करने का आशीर्वाद दीजिए।

40

हे पीयूषप्रदात्री माँ! आपसे बिना पूछे
मैंने सन् 1969 में पूज्य गणिनीप्रमुख
श्री ज्ञानमती माताजी से 11 वर्ष की
उम्र में 5 वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत लिया पुनः
सन् 1971 में सुगन्ध दशमी के दिन आजन्म
ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया, किन्तु ज्ञात होने
के बाद आपने मुझे विवाह बंधन में बंधने
के लिए बाध्य नहीं किया। इस उपकार
का ऋण मैं कैसे चुकाऊँ ?
केवल पदवन्दन करके उपकार
का स्मरण ही कर सकती हूँ।

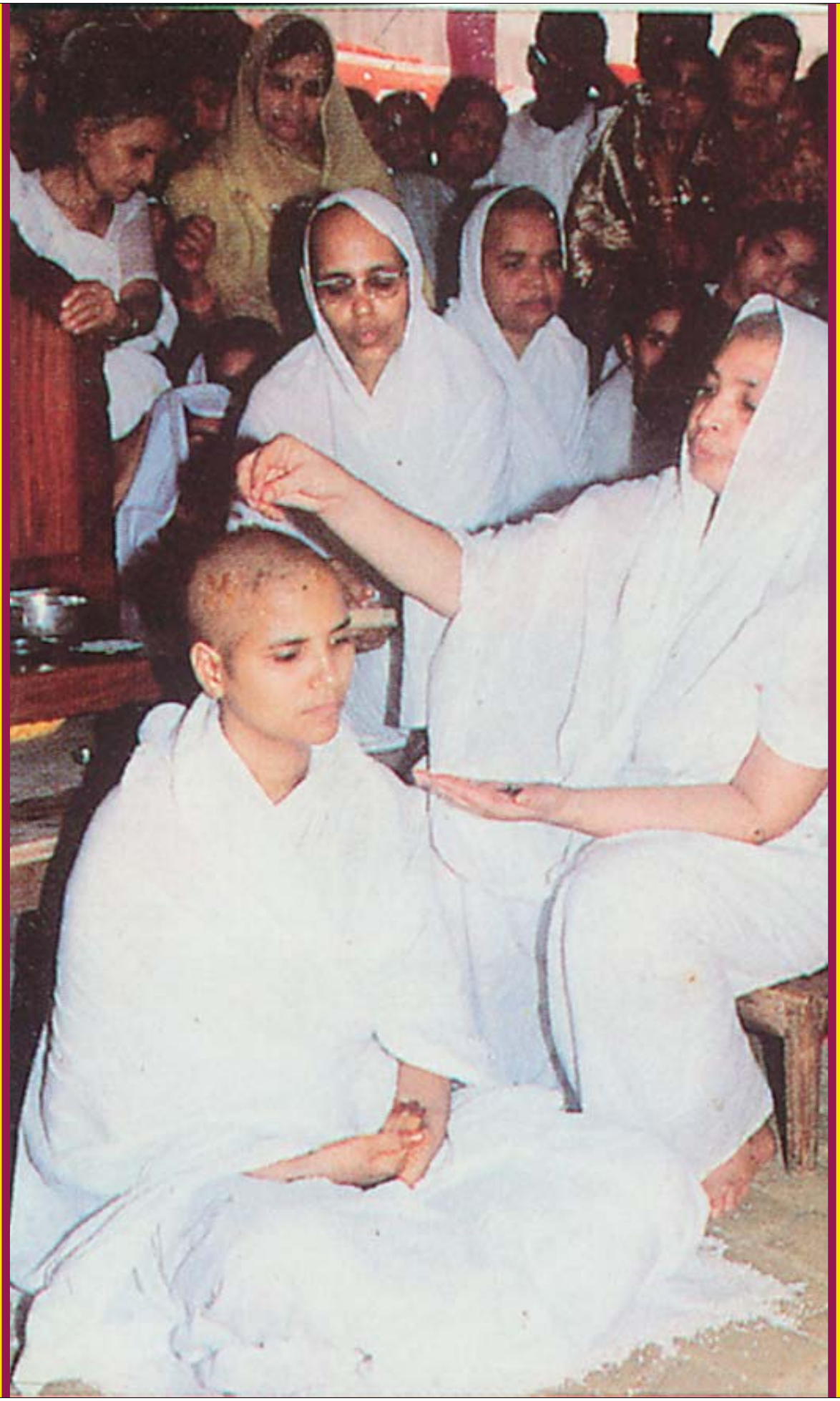

41

हे निःस्वार्थ उपकारिणी माँ!
मोक्ष प्राप्त करने तक भी मैं आपका
उपकार नहीं भूल सकती हूँ,
क्योंकि आपने अपनी ममता के
साथ-साथ मुझे एक ऐसे शिल्पी के
हाथों में सौंपा कि जिन्होंने मुझ
पाषाण के टुकड़े को तराश कर
योग्य आकार प्रदान किया है।

शलाका

42

हे माँ! पूज्य ज्ञानमती माताजी की
सतत आज्ञा पालन करते हुए
मुझे देखकर आप गद्गद हो
जाती थीं न, अब भी आप ऐसा
आशीर्वाद देती रहना कि आपके
द्वारा स्पर्शित कराए गये ये गुरुचरण
उनके साथ ही सिद्धशिला पर जाने
तक युगल चारण ऋद्धिधारी मुनियों
के सदृश आचरण पथ पर चलते रहें।

43

हे मेरी प्राणप्यारी माँ!
जीवन में विषम
परिस्थितियाँ आने पर भी
मेरा धैर्य न छूटने पाए
ऐसा आशीष मस्तक पर
रखने का
निवेदन करती हूँ।

44

हे सत्यपथप्रदर्शिका माँ!
अपनी गुरुमाता, संघ एवं
समाज के प्रति हमेशा निःस्वार्थ
कर्तव्य पालन करते हुए सत्यपंथ
का अनुसरण कर सकूँ, इस
अभिलाषा के साथ आपके पवित्र
पादारविन्द में वंदन करती हूँ।

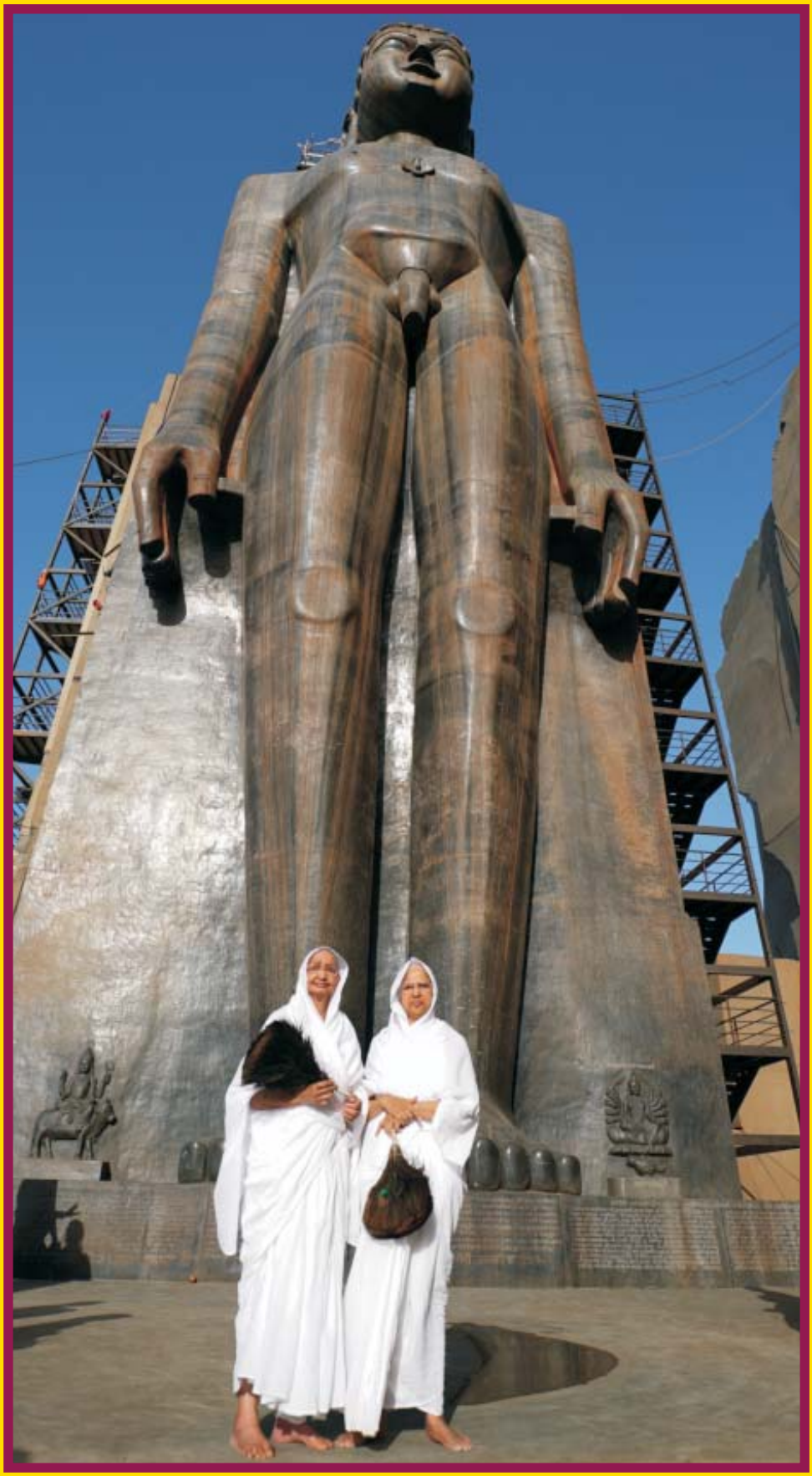

45

हे माँ!
आपके वात्सल्यमयी आँचल की
छांव में तो मात्र मेरा बचपन बीता है,
उससे पाँच गुना समय आपकी कृपा
प्रसाद से गुरुमाता पूज्य ज्ञानमती
माताजी के वात्सल्य पूर्ण सान्निध्य में
व्यतीत हुआ है सो यह पंचमगति-
सिद्धगति को प्राप्त कराने में
प्रबल निमित्त बनेगा,
ऐसा मेरा विश्वास है।

46

हे कोमलांगिनी माँ!
आप मन-वचन और काय
तीनों से कोमल थीं, रंचमात्र
भी कुटिलता-मायाचारी आपके
अंदर मैंने नहीं देखी। ऐसी
परिणाम कोमलता मुझे भी प्राप्त हो,
आशीर्वाद देने की कृपा करें।

47

हे दयामूर्ति माँ! प्राणीमात्र के प्रति
जो आपके हृदय में दया और करुणा
का भाव मैंने देखा, वह वर्तमान युग के
विरले मानव में देखने को मिलती है।
ऐसी दया-करुणा का स्रोत मेरे हृदय
में भी प्रवाहित होता रहे, यही आपकी
दया अपने मस्तक पर चाहती हूँ।

48

हे कर्तव्यबोधप्रदात्री माँ! आप गृहस्थ अवस्था में सदा अपनी संतानों को संबोधन देती थीं न, कि अपने नगर में कभी भी दिगम्बर जैन साधु-साध्वियों का पदार्पण हो तो घर में पूर्ण शुद्ध भोजन बनाकर चौके में साधुओं को नवधाभक्तिपूर्वक आहार अवश्य कराना। उस नियम का पालन आज भी उस गृहस्थ परिवार के सभी लोग कर रहे हैं। मोक्षमार्ग में चलने वाले उन गृहस्थ पथिकों के लिए भी आपका ''सद्धर्मवृद्धिरस्तु'' आशीर्वाद सदैव अपेक्षित है।

49

हे मातेश्वरी!
आपकी मोहिनी मूरत
भक्तजन आज तक
बहुत याद करते हैं
जो आपके छलकते
मातृत्व का प्रतीक थी।

50

हे माँ! आपकी मंद-मंद मुस्कान
स्मरण करते ही मन आपके
पास दौड़ कर आने को
मचलने लगता है, यही
मुस्कान मानसिक निश्छलता
का प्रतीक है। हर माँ के चेहरे पर
ऐसी ममतामयी मुस्कान बिखरती
रहे, ऐसा सदाशय प्रेषित करें।

51

हे जनरंजिनी माँ!
आपने जिस निस्पृहता के
साथ अपने दीक्षित जीवन में
आर्यिका व्रतों का पालन
किया है, वह मेरी दृष्टि से कभी
ओझल नहीं हो सकते हैं।
उसका रञ्चमात्र भी निर्दोष
पालन करने में मैं अपना
अहोभाग्य मानती हूँ।

52

माँ! शक्ति दो,
भक्ति दो और युक्ति भी दो,
ताकि रत्नत्रय साधना से
एक दिन मुक्ति की
प्राप्ति हो।

53

माँ! आपने जैसे अपूर्व कला
कौशल के द्वारा नारी जीवन के
चरमलक्ष्य को प्राप्त कर
जीने की कला सिखाई है,
उसी प्रकार विलक्षण समाधिमरण
करके संसार से जाने की
कला भी सिखाई है।

54

माँ! आपने सन् 1914 में महमूदाबाद-
जिला सीतापुर, उत्तरप्रदेश में जन्म लिया था।
पिता सुखपाल दास जैन एवं माता मत्तोदेवी ने
सन् 1932 में आपका विवाह टिकैतनगर-
जिला बाराबंकी, उत्तरप्रदेश निवासी
श्रेष्ठी धन्य कुमार जी के सुपुत्र
श्री छोटेलाल जैन के साथ कर दिया।
पुनः सद्गृहस्थ के कर्तव्यों का पालन
करके नारियों का आदर्श बनीं उन
माता के चरणों में नमन।

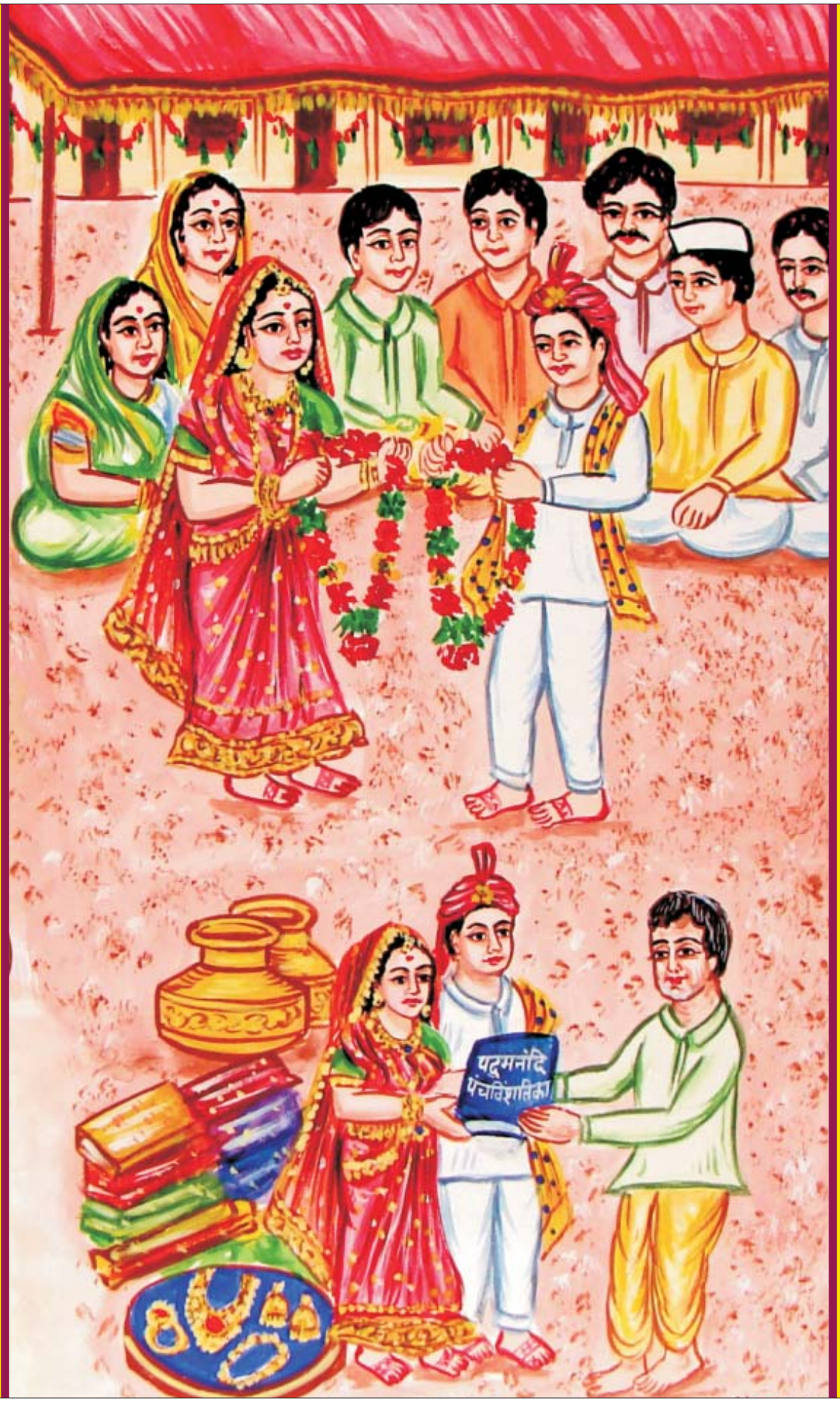
पद्मनंदि
पंचविंशतिका

55

माँ! आपको विवाह के
समय माता-पिता ने
दहेज में
"पद्मनंदिपंचविंशतिका"
ग्रंथ देकर एक
अलौकिक इतिहास
बना दिया।

H.S. S.D.J.V. 3

56

हे जगज्जननी!
उस ग्रंथ के स्वाध्याय का
ही प्रतिफल है कि
आपकी सन्तानों में
ज्ञान और वैराग्य के
अंकुर उत्पन्न हुए।

57

माँ! मैं चिन्तन करती हूँ कि मुझे आपके जीवनकाल में दीक्षा धारण करना चाहिए था, किन्तु आपके जाने के 4 वर्ष 7 माह बाद दीक्षा लेकर मैंने गुरु मुख से ''आर्यिका चन्दनामती'' नाम प्राप्त किया। अतः अब 30 वर्ष की अपनी दीक्षित बालिका को अपने समान ही सहनशीलता प्रदान कीजिए, यही प्रार्थना है।

58

माँ! आपके द्वारा दिये गये जीवन को मैंने 60 वर्ष तक अत्यन्त सफलता-सजगता और सहजता के साथ जिया है, यह आपके और पूज्य गुरु माँ गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा प्रदत्त संस्कारों का ही प्रतिफल है, अतः युगल चरणद्वय के प्रति भावभीना अभिवंदन।

60
Completed

59

माँ! मेरी आयु की षष्ठिपूर्ति
गुरुचरणों में पावन सिद्धक्षेत्र
मांगीतुंगी की धरा पर एक
उत्सव के रूप में मनाई जा रही है,
यह मात्र औपचारिकता है।
मेरी इस उत्सव के प्रति
तनिक मात्र भी रुचि नहीं है।
मुझे तो आत्मविशुद्धि का
मात्र आशीर्वाद चाहिए।

60

माँ! हो सके तो 60 में से शून्य निकालकर मुझे 6 वर्ष के बालक जैसे बचपन को वापस दे दो, ताकि मैं परोक्ष में आपकी गोद और साक्षात् प्रत्यक्ष में मूल्यवान जीवन प्रदात्री पूज्य भारतगौरव दिव्यशक्ति ज्ञानमती माताजी के आंचल तले खेल-कूदकर अपने शैशव का आनंद ले सकूँ।

61

माँ! आदिब्रह्मा भगवान ऋषभदेव की सर्वोच्च प्रतिमा की छत्रच्छाया में मेरा नवजीवन प्रारंभ हो रहा है यही मेरा परम सौभाग्य है। भगवान, गुरु एवं माँ के आशीर्वाद का संबल मुझे पवित्र और स्वस्थ रखे। अनन्तशः नमन के साथ सारे संसार के प्रति मैत्री की भावना-

अमूल्य शिक्षाएँ

- किसी भी विषम परिस्थिति में धर्म, धैर्य और गुरु को मत छोड़ना, ये ही मानव जीवन के लिए असली सहारा हैं।
- ''शुभस्य शीघ्रं'' सूक्ति के अनुसार शुभ कार्य करने में शीघ्रता करें, क्योंकि काल का कोई भरोसा नहीं है।
- जन्मदिन पर केक काटना, मोमबत्ती बुझाना अशुभ का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति के अनुसार लड्डू-खीर खाना, दीपक जलाकर भगवान की आरती करना उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक है।

- दूसरे की सफलता देखकर ईर्ष्या करने की बजाय खुद सफलता के सोपानों पर चढ़ने का प्रयत्न करो, यही सच्ची मानवता है।
- कीचड़ में पैर रखकर धोने की अपेक्षा कीचड़ में पैर नहीं रखना अधिक श्रेयस्कर है। अर्थात् गृहस्थरूपी कीचड़ में पैर न रखकर बालब्रह्मचारी रहना अति पवित्र कार्य है।
- पिच्छीधारी दिगम्बर जैन मुनि मुद्रा का सदा सम्मान करें, क्योंकि मुद्रा सदैव पूज्य होती है।
- जैनधर्म का मूल मंत्र है-णमोकार महामंत्र। इसका सदैव पाठ, चिन्तन, जाप्य करने से समस्त मनोरथ सिद्ध होते हैं।

- बिना सोचे कुछ करना नहीं और इतना भी नहीं सोचना कि कुछ कर ही न सको। अर्थात् थोड़ा सोच-विचार करके कार्य को प्रारंभ कर देना चाहिए।
- आज के कलियुग में सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति सर्वाधिक कर्म-निर्जरा के लिए माध्यम है अतः इनकी भक्ति करके मानव जन्म सार्थक करें।
- गरम-गरम मत खाओ, ठण्डा करके खाओ। अर्थात् गुस्से में कोई निर्णय मत लेना, गुस्सा शांत करके लिया गया निर्णय ही उचित होता है।

- अपने दैनिक जीवन में हमेशा अहिंसक वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए, चाहे वह खाने की हो अथवा सौंदर्य प्रसाधन की।
- तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणक भूमियाँ वास्तविक और प्राकृतिक तीर्थ हैं, उनका विकास करना प्रत्येक जैन का प्राथमिक कर्तव्य है।
- अपने दैनिक जीवन में प्रतिदिन कम से कम पाँच मिनट ध्यान साधना अवश्य करें, इससे मन पवित्र होगा।
- आत्मशांति के लिए प्रतिदिन जैनग्रंथों का स्वाध्याय अवश्य करना, इससे तत्त्वज्ञान विकसित होगा।

पुस्तक प्रकाशन के पुण्यार्जक

श्री कैलाशचंद-आदीश कुमार-अध्यात्म-सिद्धार्थ जैन सर्राफ
चौक-लखनऊ (उ.प्र.)

***

श्री सुभाषचंद शुभचंद सुयश जैन
टिकैतनगर-लखनऊ (उ.प्र.)

***

श्री वीर कुमार-राजन-अकलंक-निकलंक जैन
टिकैतनगर-लखनऊ (उ.प्र.)

***

श्रीमती जैन-प्रदीप कुमार-शरद कुमार जैन
बहराइच (उ.प्र.)

***

कुमुदनी जैन-संजय जैन-विजय जैन
कानपुर (उ.प्र.)

***

सौ. मालती जैन-पारस जैन
बसंतकुंज, दिल्ली

***

कामनी जैन-अरिंजय-धनंजय जैन
दरियाबाद (उ.प्र.)

***

सौ. त्रिशला जैन-अभिषेक जैन-अरिहंत जैन
लखनऊ (उ.प्र.)

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 503

ISBN-978-93-87891-15-9

-प्रकाशन तिथि-
ज्येष्ठ कृ. अमावस, 13 जून 2018

-प्रतियाँ-
1000

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994

: Website :

www.jambudweep.org www.encyclopediaofjainism.com

www.mangitungi108ftidol.com

E-mail : jambudweeptirth@gmail.com